10 भीष्म की प्रतिज्ञा

नाटक के पात्र

शान्तनु	:	हस्तिनापुर के सम्राट
भीष्म	:	हस्तिनापुर के युवराज
दाशराज	:	निषादों के राजा
सत्यवती	:	दाशराज की पुत्री

सैनिक, द्वारपाल, देवगण और सत्यवती की सखियाँ

टिप्पणी :- यह एक ऐतिहासिक संदर्भों पर आधारित एकांकी है। एकांकी में सभी पात्रों के नाम इसी संदर्भ में प्रयुक्त हुए हैं।

पहला दृश्य

[स्थान : यमुना के निकटवर्ती प्रांत में निषादों के राजा दाशराज का निवास-स्थान ।]

दाशराज : भरत कुल में श्रेष्ठ हस्तिनापुर के महाराजा शान्तनु का स्वागत है। जिनका स्वागत करने में देवराज इन्द्र भी अपने को समेट नहीं पाते, उनका स्वागत निषादों का यह छोटा-सा सामन्त किस साहस से करे। फिर भी इस झोंपड़ी में आपका स्वागत है, महाराज !

शान्तनु : आप मेरे मित्र हैं दाशराज ! आप देश की अत्यन्त प्राचीन जाति के राजा हैं । आपके पूर्वज निषादराज गुह को भगवान रामचन्द्र का सखा होने का गौरव प्राप्त था । मैं इस सम्बन्ध को, इस स्नेह-सूत्र को, और भी दृढ़ बनाने के विचार से यहाँ आया हूँ ।

दाशराज : यह मेरा सौभाग्य होगा राजन् ! आप आज्ञा दें ।

शान्तनु : आपकी परम सुन्दरी कन्या योजनागन्धा सत्यवती को मैं हस्तिनापुर की राजरानी बनाना चाहता हूँ।

दाशराज : यह मेरा परम सौभाग्य होगा महाराज, परन्तु हस्तिनापुर का राजरानी पद का बोझ यह निषादकन्या कैसे उठा सकेगी ?

शान्तनु : आपकी कन्या नारी-रत्न है, दाशराज ! वह संसार के बड़े से बड़े सम्राट की

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

राजरानी होने के योग्य है। अपनी सुन्दरता से उर्वशी और मेनका को लजाती हुई वह इन्द्रपुरी की भी शोभा बढ़ा सकती है। फिर इस विवाह से दो जातियों का हृदय भी जुड़ेगा। निषाद हमारे मित्र बनकर हस्तिनापुर के राज्य की शक्ति बढ़ाएँगे। आप संकोच न करें।

दाशराज : संकोच नहीं महाराज, मेरी बेटी हस्तिनापुर की राजरानी बनेगी यह तो मेरे लिए गर्व का विषय होगा। भरत-कुल से सम्बन्ध होने से मेरा गौरव बढ़ेगा ही।
परन्तु,

शान्तनु : परन्तु, क्या निषादराज ?

दाशराज : परन्तु, मैं नहीं चाहता कि मेरी कन्या की सन्तान हस्तिनापुर के युवराज की सामंत बने। वीरों में श्रेष्ठ, अस्त्र-विद्या में पारंगत, युवराज देवव्रत के रहते हुए दूसरा और रास्ता ही क्या है!

शान्तनु : साफ कहिए, आप क्या चाहते हैं दाशराज ? मैं समझा नहीं।

दाशराज : मैं चाहता हूँ राजन् कि आपके बाद सत्यवती का पुत्र हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बैठे। नहीं तो इस विवाह का केवल एक अर्थ होगा- या तो सत्यवती की सन्तान के लिए दासता अथवा बलवान के साथ शत्रुता।

शान्तनु : आप यह क्या कह रहे हैं, निषादराज ? आप जानते हैं वीरों में श्रेष्ठ देवव्रत सर्वथा योग्य और सुशील हैं। प्रजा उन्हें प्यार करती है। राजगद्दी पर उनका अधिकार है। मैं जरा अधिकार से उन्हें वंचित नहीं कर सकता।

दाशराज : तो मुझे क्षमा करें, महाराज ! मैं सत्यवती को हस्तिनापुर के भावी महाराज की सेवा-हेतु दासों की संख्या में वृद्धि करने के लिए नहीं भेज सकता। यह आपकी महानता है कि आपने निषादों से मित्रता और प्रेम का नाता जोड़ना चाहा है। परन्तु देवव्रत या उनकी सन्तान भी इतनी ही उदार होगी, इसका विश्वास मैं कैसे करूँ?

शान्तनु : आप ठीक कह रहे हैं निषादराज ! लेकिन आपका कहना मानने का अर्थ है युवराज देवव्रत के साथ अन्याय। मैं अपने देवता-तुल्य पुत्र के साथ ऐसा अन्याय नहीं कर सकता।

© BSTBPC WEB COPY : NOT TO BE PUBLISHED

(शान्तनु उदास मन उठकर चले जाते हैं-निषादराज उन्हें आदरपूर्वक विदा करने के लिए बाहर तक जाते हैं, जहाँ महाराज शान्तनु का रथ खड़ा है।)

[पर्दा गिरता है]

दूसरा दृश्य

स्थान : दाशराज का घर

[दाशराज की पुरी में एक बार फिर हलचल है। आज पुरी में हस्तिनापुर के राजकुमार देवव्रत पधारे हैं। उनके साथ कुछ सामंत और नौकर-चाकर भी हैं।]

दाशराज : (सबको बैठने का संकेत करते हुए) आइए युवराज ! जिसके वाणों की बौछार से गंगा की धारा रुक गई थी, जिसकी वीर भुजाओं की छाया में हस्तिनापुर राज्य की प्रजा सुख की नींद सोती है, जिनसे मित्रता करने के लिए देव, गन्धर्व, यक्ष सब लालायित रहते हैं, ऐसे वीर शिरोमणि देवव्रत का निषादपुरी में स्वागत है। कहिए क्या आज्ञा है?

देवव्रत : निषादराज! मैं आज्ञा देने नहीं आया हूँ । आपसे प्रार्थना करने आया हूँ । मैं माँ सत्यवती को हस्तिनापुर ले जाने के लिए आया हूँ । पिताजी जब से यहाँ से गए हैं, उदास हैं । वे आज राजदरबार में भी नहीं आए । मैं पिताजी का दु:ख नहीं देख सकता । बताइए क्या बात है?

दाशराज : तो महाराज ने आपसे कुछ बताया नहीं ? मैंने तो उनसे अपनी बात साफ-साफ कह दी थी।

देवव्रत : नहीं, उन्होंने मुझसे कुछ नहीं बताया ।

दाशराज : ठीक है, वह आपका दिल दुखाना नहीं चाहते होंगे । मेरी शर्त भी तो असंभव है। मैं जानता हूँ उसे मानना आपके साथ अन्याय करना होगा ।

देवव्रत : बात क्या है ? मैं भी तो सुनूँ । आप नि:संकोच कहें ।

दाशराज : मैंने महाराज से कहा था कि मैं सत्यवती का विवाह तभी करूँगा, जब उसका पुत्र ही हस्तिानुपर की राजगद्दी पर बैठे ।

देवव्रत : मुझे यह शर्त मंजूर है । मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं हस्तिनापुर की राजगद्दी पर नहीं

बैठूँगा । सत्यवती का पुत्र, मेरा भाई ही हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठेगा । मैं उसकी वैसे ही सेवा करूँगा जैसे आज हस्तिनापुर के सम्राट की कर रहा हूँ ।

दाशराज : धन्य हैं, राजकुमार ! आप निश्चय ही अपनी प्रतिज्ञा का पालन करेंगे । मुझे इसमें जरा भी संदेह नहीं है, परन्तु आपकी प्रतिज्ञा का पालन क्या आपकी सन्तान भी करेगी ? ऐसा न हो कि यह विवाह झगड़े की जड़ बन जाए, और यह बहुत बुरा होगा, क्योंकि तब वह दो जातियों का झगड़ा बन जाएगा ।

देवव्रत : मैं आपकी बात मानता हूँ। पर मैं दो जातियों और दो कुलों का मेल-मिलाप चाहता हूँ। इसमें देश का भला है। आज मुझे एक साथ दो पुण्य कार्य करने का अवसर मिल रहा है। पिताजी को सुखी बनाने का और दो कुलों को जोड़ने का। मैं बड़ा से बड़ा त्याग करके भी इस पवित्र कर्त्तव्य का पालन करूँगा। निषादराज! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं विवाह ही नहीं करूँगा।

(दाहिना हाथ ऊपर उठाकर)

आकाश के सूर्य-चन्द्र, अन्तरिक्ष के देवता, सब चीजों को धारण करनेवाली पृथ्वी, संसार की प्रत्येक वस्तु में रहने वाली अग्नि, दसों दिशाओं के दिक्पालों, आप सब कान खोलकर सुन लें और साक्षी रहें, देवव्रत आजीवन ब्रह्मचारी रहेगा।

(देवव्रत की प्रतिज्ञा सुनकर निषादराज अवाक् रह जाते हैं। आकाश से फूलों की वर्षा होती है और ध्वनि आती है-''भीष्म-भीष्म-देवव्रत-ऐसी प्रतिज्ञा करने वाला न अब तक पैदा हुआ है, न होगा- आज से तुम्हारा नाम 'भीष्म' हुआ।'')

दाशराज : (प्रसन्न होकर), मुझे अब कुछ नहीं कहना है, युवराज ! मुझे महाराज शान्तनु की आज्ञा शिरोधार्य है ।

भीष्म : ठीक है, तो बुलाइए, माताजी को। बाहर रथ तैयार है, मैं उन्हें साथ ही ले जाऊँगा।

(सखियों से घिरी सत्यवती घर से निकलती है। भीष्म सत्यवती का पैर छूते हैं।)

(पर्दा गिरता है)

-वंशीधर श्रीवास्तव

शब्दार्थ :

प्रतिज्ञा -	शपथ	**पारंगत** -	निपुण
सामंत -	जमींदार	**अस्त्र** -	फेंककर चलाया जानेवाला हथियार
श्रेष्ठ -	उत्तम	**सम्राट** -	राजा

© BSTBC NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. शान्तनु कहाँ के महाराजा थे ?
2. निषादराज ने राजा से अपनी कन्या के विवाह के लिए क्या शर्त्त रखी?
3. राजा को निषादराज की शर्त मानने में क्या कठिनाई थी?
4. देवव्रत ने हस्तिनापुर की गद्दी पर नहीं बैठने की प्रतिज्ञा क्यों की ?
5. देवव्रत का नाम भीष्म क्यों पड़ा?
6. **देवव्रत ने दाशराज की शर्त्त क्यों मान ली? सही कथन के आगे (√) का निशान लगाइए ।**

   (क) वह राजा नहीं होना चाहते थे।

   (ख) उन्हें निषादराज को प्रसन्न करना था।

   (ग) वह ब्रह्मचारी बनकर यश कमाना चाहते थे।

   (घ) वह अपने पिताजी को सुखी देखना चाहते थे।

7. **मिलान करें -**

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
शान्तनु	निषादों के राजा
भीष्म	दाशराज की पुत्री
दाशराज	हस्तिनापुर के सम्राट
सत्यवती	हस्तिनापुर के युवराज

पाठ से आगे-

1. अगर आप भीष्म की जगह होते तो क्या करते?
2. इस एकांकी का कौन-सा पात्र आपको अच्छा लगा। क्यों?
3. हस्तिनापुर को वर्तमान में क्या कहा जाता है?
4. दाशराज की शर्त आपको उचित या अनुचित लगी। क्यों?

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

व्याकरण-

1. वाक्य प्रयोग द्वारा अंतर crk ¡A

(क) कुल
कूल

(ख) नारी
नाड़ी

(ग) अस्त्र
शस्त्र

(घ) पुरी
पूरी

(ङ) सेवा
शुश्रूषा

2. निवास-स्थान में योजक चिह्न (-) लगे हुए है। इस तरह के अन्य उदाहरण पाठ से चुनकर लिखिए।

3. उदाहरण के अनुसार लिखें-

महाराज	युवराज	निषादराज	दाशराज
सत्यवती	.....	.....	.....
हस्तिनापुर	.....	.....	.....
द्वारपाल	.....	.....	.....
रामचन्द्र	.....	.....	.....
राजरानी	.....	.....	.....
इन्द्रपुरी	.....	.....	.....

कुछ करने को-

1. इस एकांकी का अभिनय बाल-सभा में कीजिए ।
2. महाभारत के कुछ महारथियों का नाम मालूम कीजिए ।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED